१. किसी के काम जो आये

किसी के काम जो आये, उसे 'इन्सान' कहते है
पराया दर्द अपनाये, उसे हम याद करते हैं

किसीको दुःख देता है, तो खुद को दुःख होता है,
किसीको सुख देता है, तो जीव को सुख मिलता है
जो करनी है वोही भरनी, उसी को 'कर्म' कहते है.... किसी के

कोई धनवान होता है, कोई इन्सान निर्धन है
कभी सुख है कभी दुःख है, इसीका नाम जीवन है
जो मुश्किलमे न धबराये, उसे 'इन्सान' कहते है.... किसी के

ये दुनिया अेक उलझन है, कहीं धोखा कहीं ठोकर
कोई हस हसके जीता है, कोई जीता है रो रो कर
जो गिर कर फिर संम्हल जाये, उसे 'इन्सान' कहते है.... किसी के

अगर गलती रुलाती है, पीछे रास्ता दिखाती है,
ये कठ-पुतली का मेला है, सबको तो रोज मिलते है
जो गलती कर के पछताये, उसे 'जागृति' कहते है.... किसी के

अकेले ही जो खा खा कर, सदा गुजरान करते है
यों भरने को तो दुनियामें, पशु भी पेट भरते है
पथिक जो बांट कर खायें, उसे 'इन्सान' कहते है.... किसी के

करुणा का असीम सागर, स्वयं भगवान होता हैं
जो भरले ज्ञान की गागर, जगत से पार होता है
प्रगट 'दादा' की आतम ज्योत

युगों को रोशनी देगी
जगतमें मोक्ष अनुभूति-(अहो ! मुक्ति)
शरीरमें शुद्ध निराकार, वो ही भगवान होते है.... किसी के